JAMNALAL BAJAJ FOUNDATION

श्री निलेश देसाई

पुरस्कार प्राप्तकर्ता

रचनात्मक कार्य के लिए पुरस्कार 2022

सम्मानिय मंचासीन महानुभावो एवं कार्यक्रम में उपस्थित विध्वजन।

अपनी सम्पूर्ण संपत्ति देश के स्वतंत्रता संग्राम के लिए समर्पित करने वाले महामानव स्व.जमनालाजी बजाज व जानकी देवी जी को में नमन करता हूं। में अभिभूत हु कि उस महान व्यक्ति के नाम से स्थापित यह प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिये मुझे चुना गया है।

में विनम्रतापूर्वक इस सम्मान को उन सभी सहकर्मियों व ग्रामीण जनों को समर्पित करता हूं जिन्होंने संपर्क संस्था के साथ मिलकर इस कार्य को इस मुकाम पर पहुँचाया है।

किसी भी समस्या का स्थायी समाधान स्थानीय ज्ञान व स्थानीय नेतृत्व के द्वारा ही संभव है।

तिलोनिया से समाज कार्य के इस मंत्र को लेकर में 1987 में पश्चिमी मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले में पहुँचा झाबुआ मूलतः आदिवासी जिला है। उन दिनों इसकी पहचान सर्वाधिक आपराधिक क्षेत्र के रूप में होती थी। पहाड़ी व पथरीली के कारण निम्न भूजल स्तर व वनों के विनाश के कारण खेती की जमीन में कमी होने लगी व सामान्य से कम वर्षा होने के कारण लोग आजीविका के लिए पलायन करने लगे।

ऐसी स्थिति में लोगो की भगीदारी से कार्य करने के लिये लोगो के साथ संवाद की प्रक्रिया शुरू करना बहुतआवश्यक था, स्थानीय लोगो का बाहरी समाज के साथ जो रिश्ता था वह शोषण व अविश्वास का था क्योंकि बाहरी समाज या तो व्यापार करने जाता या शासकीय कर्मी किसी शासकीय योजना के तहत जाता सभी लोग किसी न किसी प्रकार से उनकी स्थिती से लाभ लेने की कोशिश करते थे।

ऐसी स्थिति में उनसे संवाद बनाने के लिए हमने नुक्कड़ नाटको को माध्यम बनाया। उन दिनों झाबुआ में स्थानीय लोक देवता वीर तेजाजी का नाटक को लोग बड़ी रुचि से देखते थे, स्थानीय युवक इन नाटकों के माध्यम से लोगो का मनोरंजन करते थे। हमने इन्ही कलाकारो को ग्राम की समस्याओं व सामाजिक मुद्दों पर प्रशिक्षित किया व स्थानीय लोक गीतों को सामाजिक संदेश का माध्यम बनाया। इस प्रक्रिया ने लोगो को एकत्रित करने व मिलजुल कर कार्य करने के लिए प्रेरित किया।अब गांव गांव में ग्राम विकास समिति का गठन व पानी की समस्या के निवारण के लिये योजना बनना शुरू हुई। किस जगह कोनसी संरचना बनेगी व लोगो की भागीदारी क्या होगी यह सब तय करते हुए गांव पानी गांव में रोकने की मुहिम जोर पकड़ने लगी।

सादगी, समानता ,सामूहिकता , सहभागिता एवं मितव्ययता आदिवासी समाज की समृद्ध परंपरा का मुख्य तत्व है। महात्मा गांधी के विचारों का सार तत्व भी यही है।

संपर्क ने विगत तीन दशकों में इन्ही मूल्यों को अपनी विकास यात्रा का आधार बनाया।

जैसे गांव का पानी गांव में, गांव का बीज गांव में, गांव का पैसा गांव में, गांव का झगड़ा गांव में।इसप्रकार गांव की अर्थव्यवस्था मजबूत करने की दिशा में कार्य किया इसी क्रम में अड़जी-पड़जी एक ऐसी परम्परा है जंहा मजदूरी का भुगतान पैसे के बदले मजदूरी के रूप मे ही किया जाता है।

यहां पर गांव का आपसी झगड़ा गांव की चौपाल पर ही सुलझाया जाता है न की पुलिस व कोर्ट में जाकर।

इन्ही समृद्ध परम्पराओ को पुनर्स्थापन करने से हजारों परिवारो ने सालाना 30 हजार से 50 हजार रुपया बचाया। इस प्रक्रिया ने न केवल परिवार को कर्ज से मुक्ति मिली बल्कि गांव में सामाजिक सौहार्द्र भी बढ़ा ओर ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत हुई।

इसके अलावा लोगों ने संगठित होकर गांव में पानी मिट्टी रोकने 'ग्रामकोष, बिजकोष, पशुसखी, स्वास्थ्य सहेली, एवं शिक्षा मित्र जैसे समुदाय आधारित अनेक प्रकल्पों का संचालन कर अपने जीवन स्तर को ऊपर उठाया है।

इसी क्रम में 1987 के दौरान क्षेत्र में काली बैंक के नाम से एक समूह सक्रिय था जो लोगो को बहुत बड़ी ब्याज दर पर कर्ज देता था एवं बहुत सख्ती से कर्ज की वसूली भी करता था। संपर्क द्वारा क्षेत्र में धोली (सफेद) बैंक अभियान चलाया गया जिसमें गांव गांव में ग्रामकोष का गठन किया गया जिसमें लोग पैसा जमा करते एवं जरूरत मन्द लोग पैसा उधार लेते एवं नियत अवधि में पैसा पुनः मय ब्याज जमा करते थे।धीरे धीरे यह अभियान बहुत जोर पकड़ने लगा गांव गांव में ग्रामकोष बनने लगे एवं इसमें लाखो रुपया हो गया इससे लोगो को शोषण से लड़ने का हौंसला मिला एवं काली बैंक का धंधा बंद हो गया।

महिलाओं को इस सफलता से हौंसला बढ़ा इसके बाद शराब, नुक्ता, दापा जैसी सामाजिक बुराइयों से लड़ने का हौंसला मिला।

इतना ही नही बालिकाओं को पढ़ाने का मामला हो या ग्राम सभाओं में गांव की समस्याओं को उठाने व पंच सरपंच के चुनाव में महिलाए बढ़ चढ़ कर हिस्सेदारी करने लगी है।

क्षेत्रीय स्तर पर सामाजिक समस्याओं पर सफलता पूर्वक कार्य करने के साथ साथ इन आदिवासियों ने एक "लोकजागृति मंच" नामक संगठन बनाया और राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर जिनान्तरित बीज, पानी का निजीकरण, खाद्यसुरक्षा, पशुधन नीति व किसानी कर्ज आदि अनेक मुद्दों पर सत्याग्रह आंदोलनो में अहम भूमिका निभाई।

इस प्रकार सामाजिक विकास की यह यात्रा रचनात्मक कार्यो से शुरू होकर सामाजिक सुधार करती हुई सत्याग्रह अभियान तक पहुंची।

लोगों के लिए नहीं ,लोगों के साथ काम करने से ही कार्य सफलता की दिशा में आगे बढ़ता है।

जब लोगो के ज्ञान व उनकी जरूरतों के अनुसार कार्यक्रम का नियोजन एवं क्रियान्वयन होता है।तब लोग यह कहते है कि यह कार्य हमने खुद ने किया है।

अंत मे मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि आज के उपभोक्तावादी विकास के मॉडल से उपजी सामाजिक व पर्यावरणीय समस्या से छुटकारा पाना है तो हमे बापू के द्वारा बताए "हिन्द स्वराज" के मार्ग पर ही चलना होगा।

जय हिंद, जय भारत, जय जगत ।

Mr. Nilesh Desai

Recipient

Constructive Work Award 2022

I pay my tributes to the memory of extraordinary human beings, Shri Jamnalalji Bajaj and Smt. Jankideviji, who dedicated their entire wealth to the cause of the Indian freedom struggle. I am overwhelmed by the fact that I have been chosen to receive this prestigious award instituted in the name of this great personality.

I would like to dedicate this honor to all my colleagues and villagers, whose co-operation has been instrumental in bringing the work of Sampark to this height (level).

The use of local know-how and involvement of local leadership only can achieve an enduring solution to any problem.

Carrying my belief in this mantra for social work with me from Tiloniya, I reached Jhabua district in western Madhya Pradesh in 1987. Jhabua is a predominantly tribal district. In those days it had a reputation as a region with the highest criminal record, lesser rainfall, decreasing cultivable land due to deforestation and low groundwater levels in hilly and rocky terrain drove people from Jhabua to migrate to other places in search of livelihood.

In this scenario, the initiation of dialogue with the people was of paramount importance, to work with the participation of locals. The outsiders reaching here were either businessmen or government employees, who would try to take advantage of the locals. The relationship of the locals with the outside world was that of exploitation and mistrust.

In such a situation, we turned the street plays into a medium for communicating with them. It was a time when people in Jhabua loved to watch a play depicting the local folk deity Vir Tejaji with great interest. Local youth used to entertain people through these plays. We trained these artists about village problems and social issues and used local folk songs as a medium of social message. This process inspired people to assemble and work together.

Now, village development committees got formed in every village and plans for addressing the problem of water were also afoot. The campaign to arrest water in the village itself started gaining momentum while deciding the spot on which the structure would be built as well as the quantum of people's participation.

Simplicity, equality, collectivism, co-operation, and frugality are the principal elements of the rich traditions of tribal society. It also forms the essence of Mahatma Gandhi's teachings.

Sampark has made these values the basis of its development journey in the last three decades.

We worked to strengthen the village economy by ensuring that the water, the seed, the money and even the dispute of the village, remained within the village itself. In this context, there is a tradition called "aijee-paijee" where wages for physical labor are paid in the form of physical labor only instead of money.

Disputes in the village are sorted out at the village Chaupal, instead of going to the police station of court. Thousands of families saved about 30 to 50 thousand rupees annually by adhering to these beautiful traditions. It not only freed the families from debt but also enhanced the social harmony in the village apart from strengthening the rural economy.

The standard of living of the people also was raised thanks to many community-based projects for the preservation of water and soil, such as *Gramkosh, Bijkosh, Pashu Sakhi, Swasthya Saheli, and Shiksha Mitra.*

Around 1987, a group by the name of Kali (black) Bank was active in the region. They used to lend at exorbitant rates and were ruthless while recovering the money. Sampark started the campaign in the name of Dholi (White) bank in the region. 'Gramkosh' was formed in the village, in which people deposited money and needy people borrowed and repaid with interest within the stipulated period.

The campaign gained a lot of momentum in due course. In village after village, people started establishing "Gramkosh" and deposits worth lakhs of rupees were accumulated. It gave the people the courage to fight back the exploitation and the Kali Bank's operations were closed forever.

Encouraged by the success, the womenfolk gathered the courage to take on social evils like alcohol, gutka etc.

Not only this, but in the matter of educating the girl child, raising the issues of the village in the gram sabhas, or the election of the Sarpanch, women have started participating spectacularly.

All the while working successfully on social issues at the regional level, the tribals formed an organization called "Lok Jagruti Manch" and played an important role in Satyagraha movements on many issues like genetically modified seeds, privatization of water resources, food security, livestock policy and farm loan etc at the state and national level.

The journey of social development which started with constructive work, reached the Satyagraha movements while continuing social reforms.

Not working for people but working with people only leads to success.

When programs are planned and implemented in accordance with the know-how of the people and their particular needs, people take pride in proclaiming that they have done the work on their own.

In the end, I have no hesitation in asserting that if we desire to get rid of the social and environmental issues arising out of the development model based on consumerism, we have to follow Bapu's path of "Hind Swaraj"

Jai Hind, Jai Bharat, Jai Jagat.